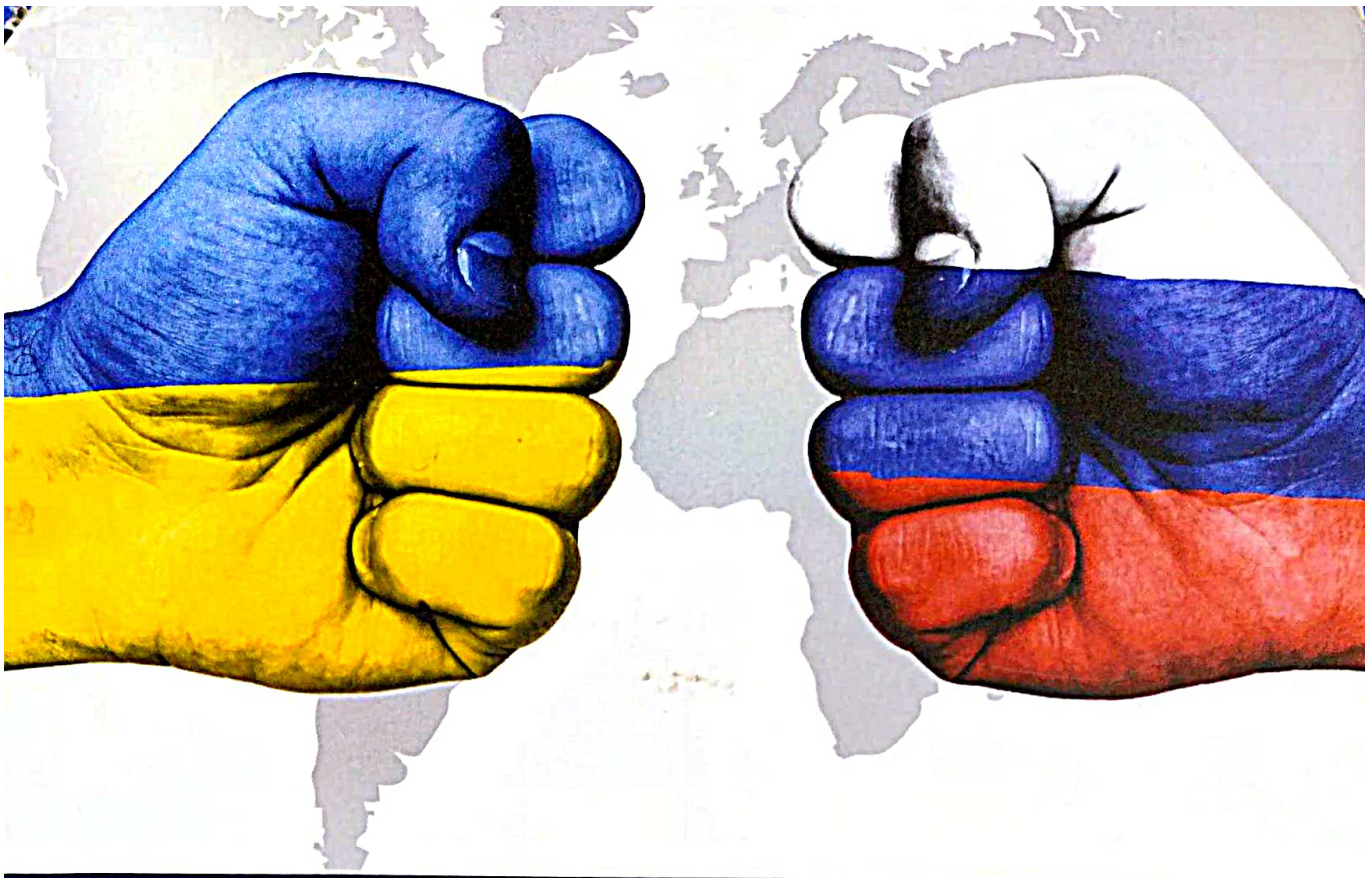

HUMAN SECURITY

Prof. (Dr.) Chandrakant Bansidhar Bhange
Prof. (Dr.) Shikha Srivastava
Dr. V.M. Suneela Shyam | Dr. Divya Rana
Mr. Devidas Vijay Bhosale | Dr. Krishna Singh
Dr. Ranjana Arvind Shringarpure | Dr. S. Uma

Dr. Ranjana Arvind Shringarpure | Dr. S. Uma

HUMAN SECURITY

Edited by:

~

Prof. (Dr.) Chandrakant Bansidhar Bhange
Prof (Dr.) Shikha Srivastava | Dr. V.M. Suneela Shyam
Dr. Divya Rana | Mr. Devidas Vijay Bhosale
Dr. Krishna Singh | Dr. Ranjana Arvind Shringarpure
Dr. S. Uma

Bharti Publications
New Delhi- 110002 (INDIA)

Copyright © 2022, Editors

Title: Human Security

Editors : Prof. (Dr.) Chandrakant Bansidhar Bhange
Prof (Dr.) Shikha Srivastava, Dr. V.M. Suneela Shyam
Dr. Divya Rana, Mr. Devidas Vijay Bhosale
Dr. Krishna Singh, Dr. Ranjana Arvind Shringarpure
Dr. S. Uma

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted, in any from or by any means, without permission. Any person who does any unauthorised act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

First Published, 2022
ISBN: 978-93-94779-17-4

Published by :
Bharti Publications
4819/24, 2nd Floor, Mathur Lane
Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi-110002
Phone: 011-46172797, 011-23247537, 9899897381
E-mail : bhartipublications@gmail.com
Website : www.bhartipublications.com

Printed in India, by S.P. Kaushik Enterprises, Delhi

Disclaimer: The views expressed in the book are the contributing author and not necessarily of the Publisher and Editors. Author is themselves responsible for any kind of plagiarism found in their paper or chapter and any related issues in book.

CONTENTS

1. India's Human Security Challenges and Policy Options — 1
Dr. Deepak Sopan Vede

2. An overview on Human Security Scenario in India — 9
Heggade N.U.R

3. Terrorism - A Transition to Organised Crime — 16
Dr. Krishna Singh

4. Roadmap & Intersection of Human Trafficking and Addiction of Drug vis-à-vis Human Rights Perspective — 22
Tripti Bhushan and Ashish Narayan

5. Acid Attacks and Women Safety — 39
Dr. Sunita S. Dhopte

6. Hollow State Security Dilemma in Post Covid World Order: A Study on Southeast Asia — 50
Mithun P.V.

7. COVID 19 Management — 57
Major (Dr.) Sanjay Chaudhary

8. Corona Virus or Covid-19 Pandemic — 64
Dr. Sabahat Rafiq Qazi

9. Road Safety and Human Security in India: An Overview — 70
Prof. Dr. Chandrakant Bansidhar Bhange and Prof. Devidas Vijay Bhosale

10. पंडित जवाहरलाल नेहरू का मानव सुरक्षा संबंधी चिंतन (इक्कीसवीं सदी के विशेष संदर्भ में)
डॉ. रजनी दुबे — 76

11. रूसी संघ तथा यूक्रेन के बीच संचालित संघर्ष का वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव
डॉ. राजेश मौर्य — 83

12. मानवी सुरक्षा आभासी प्रतिमा – एक अभ्यास
डॉ. मंगेश भगवंतराव कुलकर्णी — 95

13. सामाजिक सुरक्षा
डॉ.राम पांडूरंग साबदे — 103

14. महामारी का इतिहास एवं उसका प्रभाव
डॉ. दिव्या राणा — 106

15. कोवीड–19 नंतरची संयुक्त राष्ट्र संघटने पुढील आव्हाने
डॉ रमेश राउत — 114

16. कोविड–19 चा समाजजीवनावर झालेला परिणाम
प्रा.डॉ.आव्हाड भगवान भानुदास — 122

17. कोव्हिड–19 आणि भारतीय अर्थव्यवस्था
डॉ. जोतीराम स. घाडगे — 129

18. कोव्हिड–19 चा भारतीय अर्थव्यवस्थेच्या विकास दरावरील परिणाम
प्रा. डॉ. शिवाजी पाते — 134

19. कोविड 19 चा शिक्षणप्रणालीवरील परिणाम
प्रा.डॉ.बालाजी परबतराव खराबे — 139

10

पंडित जवाहरलाल नेहरू का मानव सुरक्षा संबंधी चिंतन (इक्कीसवीं सदी के विशेष संदर्भ में)

डॉ. रजनी दुबे *

सारांश

प्रचीनकाल से ही सुरक्षा की अवधारणा की संकीर्ण रूप से व्याख्या की गई है। इसे बाहरी आक्रमण से क्षेत्र की सुरक्षा या विदेष नीति में राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा या परमाणु प्रलय के खतरे के रूप में माना गया है। सुरक्षा की अवधारणा लोगों के हितों की तुलना में राष्ट्र–राज्यों के हितों से जुड़ी हुई है। इस प्रक्रिया में आम लोगों की वैध चिंता और उनके दैनिक जीवन में व्यक्तिगत सुरक्षा की उनकी खोज, बीमारियों, भूख, बेरोजगारी, अपराध, सामाजिक संघर्ष, राजनीतिक दमन और पर्यावरण क्षरण के खतरे से सुरक्षा को भुला दिया गया। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू एन डी पी) ने 1994 की अपनी मानव विकास रिपोर्ट में सबसे पहले सुरक्षा के इस आयाम को व्यक्त किया जिसे मानव सुरक्षा के रूप में जाना जाता है। महात्मा गांधी की तरह पंडित जवाहरलाल नेहरू का जीवनवृत्त भी, जिस बौद्धिक वातावरण में व्यतीत हुआ वह मानव सुरक्षा के आग्रहों से अभिप्रेरित था। नेहरू का संपूर्ण जीवन मानव सुरक्षा के सजग प्रहरी, समता, लोकतंत्र और बंधुत्व के प्रेरक के रूप में जाना जाता है। नेहरू की मनुष्य की सत्ता में पूर्ण आस्था थी।

मुख्य शब्द– मानव सुरक्षा, मानवाधिकार, अंतर्राष्ट्रीय शांति सुरक्षा, सम्प्रदायवाद जाति, धर्मभेद, राजनीतिक दमन, परमाणु प्रलय, लोकतांत्रिक समाजवाद।

* प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर, उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

मानव सुरक्षा के पीछे मूल विचार– मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा के अनुच्छेद 3 के अनुसार व्यक्ति की सुरक्षा का अधिकार जीवन और स्वतंत्रता के अधिकार के साथ–साथ एक मौलिक मानव अधिकार है। मानव समाज नागरिकों के सषक्तिकरण को मजबूत करने की आवष्यकता पर जोर देता है। मानव समाज की उपलब्धि के लिए एक वैश्विक राजनीतिक संस्कृति की आवष्यकता होती है, जो मानव गरिमा और मानव अधिकार के साझा मूल्यों पर आधारित हो। संक्षेप में मानव समाज का अर्थ है लोगों के अधिकारों, उनकी सुरक्षा या यहां तक कि उनके जीवन के लिए व्यापक खतरों से मुक्ति। मानव समाज की यू एन डी पी की अवधारणा का मुख्य संकुचन लोगों पर ध्यान केंद्रित करना और हिंसा के अलावा अन्य खतरों के प्रति संवेदनषीलता को उजागर करना था। इसने सुरक्षा को "एकीकृत" के बजाय "रक्षात्मक अवधारणा" के रूप में देखा। लेकिन ऐसा लग रहा था कि यह हिंसा से होने वाले खतरों को कम आंक रहा है। यह इस बात पर जोर देता है कि मानव सुरक्षा में भौगोलिक और यहां तक कि अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद, मादक पदार्थों, की तस्करी के साथ–साथ राष्ट्र–राज्य की सीमाओं के बाहर फैले अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों की समस्या है।

मानव सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए लोकतंत्र और सुषासन बहुत महत्वपूर्ण है। मानव सुरक्षा राष्ट्रीय सुरक्षा का स्थान नहीं लेती है। एक मानव सुरक्षा परिप्रेक्ष्य यह दावा करता है कि राज्य की सुरक्षा अपने आप में एक अंत नहीं है बल्कि यह अपने लोगों के लिए आगामी सुरक्षा का एक साधन है। इस संदर्भ में राज्य सुरक्षा और मानव सुरक्षा परस्पर सहायक है।

एक प्रभावी लोकतांत्रिक राज्य का निर्माण, जो अपने लोगों को महत्व देता है और अल्पसंख्यकों की रक्षा करता है, मानव सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए एक केंद्रीय रणनीति है।

मानव सुरक्षा की अवधारणा – मानव सुरक्षा का अर्थ है हिंसक और अहिंसक दोनों तरह के खतरों से लोगों की सुरक्षा। यह लोगों के अधिकारों, उनकी सुरक्षा या यहां तक कि उनके जीवन के लिए व्यापक खतरों से मुक्ति की विषेषता होने की स्थिति या अवस्था है। मानव सुरक्षा नेटवर्क की धारणा है "हमारी दृष्टि एक मानवीय दुनिया है, जहां लोग हिंसक खतरों, गरीबी और निराषा से मुक्त सुरक्षा और सम्मान में रह सकते हैं।"

संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान ने स्पष्ट किया कि सुरक्षा नीति का प्राथमिक ध्यान लोगों की सुरक्षा होना चाहिए ना कि राज्यों की राजनीतिक और क्षेत्रीय अखंडता 'मानव सुरक्षा' की अवधारणा के लिए आवष्यक है।

मानव सुरक्षा 'अंतरष्ट्रीय शांति और सुरक्षा' के हालिया दृष्टिकोणों का तार्किक विस्तार है संयुक्त राष्ट्र का चार्टर इस विचार का प्रतीक है कि सुरक्षा एक अकेले राज द्वारा हासिल नहीं की जा सकती है। 'अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा' वाकयांष का तात्पर्य है कि हमारे राज्य की सुरक्षा अन्य राज्यों की सुरक्षा पर निर्भर करती है।

एक मानव सुरक्षा परिप्रेक्ष्य इस तर्क पर आधारित है कि दुनिया के एक हिस्से मे लोगों की सुरक्षा कहीं और लोगों की सुरक्षा पर निर्भर करती है।

यूएनडीपी के अनुसार, मानव सुरक्षा एक सार्वभौमिक चिंता है मानव सुरक्षा के यौगिक अन्योन्याश्रित है, प्रारंभिक रोकथाम के माध्यम से मानव सुरक्षा सुनिश्चित करना आसान है, और मानव सुरक्षा जन– केंद्रित है। रिपोर्ट में अग्रिम परिभाषा अत्यंत महत्वकांक्षी थी। मानव सुरक्षा को सुरक्षा के सात अलग–अलग आयामों के योग के रूप में परिभाषित किया गया था– अर्थषास्त्र, भोजन, स्वास्थ्य, पर्यावरण, व्यक्तिगत, समुदायिक और राजनीतिक।

नेहरू एक महान मानवधिकार वादी थे। नेहरू की मनुष्य की सत्ता में पूर्ण आस्था थी। टैगोर ने लिखा है "ईश्वर की सत्ता से हम इंकार कर सकते हैं परंतु यदि मनुष्य की सत्ता से इंकार कर दें और इस प्रकार प्रत्येक वस्तु को निरर्थक बना दें तो हमारे लिए आषा ही क्या रह जाएगी"

टैगोर ने के इस कथन में नेहरू की पूर्ण आस्था थीं नेहरू के जीवन पर प्रकाष डालते हुए डॉ. राधाकृष्णन ने कहा है– "नेहरू का जीवन सेवा व समर्पण का जीवन था वह हमारी पीढी के महानतम व्यक्ति थे।" उनका समाज के गरीब, पीड़ित, दलित महिला और मानव अधिकारों के सुधार के लिए बड़ा आग्रह था। वे जीवन पर्यन्त समाज में समानता लाने के लिए प्रयत्नषील रहे। मनुष्य के देवत्व में उनकी महान आस्था थी। वे मनुष्य के गौरव में पूर्ण विश्वास करते थे। डॉ. राधाकृष्णन ने लिखा है– "मानवतावाद के रूप मैं नेहरू के चिंतन की सुकुमारता, भावना की आद्वितीय कोमलता और मानव की उदार प्रवृत्तियों का अद्भुत समिश्रण था। दुर्बल और हताष व्यक्तियों के लिए उनके हृदय में अपार सहानुभूति उमडती थी।" उनकी विचारधारा का मूल केंद्र 'मानव और उसकी सुरक्षा है।' वे व्यक्ति को साध्य ओर से सभी को साधन मानते थे। उनका समाजवाद मानवता की सेवा और मानवाधिकारों का ही एक भाग था। नेहरू के दर्षन के प्रमुख आयामों में सामाजिक समानता, व्यक्ति की गरिमा, लोकतांत्रिक समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, विश्व शांति, मानवाधिकार व लोकतंत्र की स्थापना सहित पंचषील महत्वपूर्ण है। नेहरू का मानना था कि नागरिकों को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता देना ही पर्याप्त नहीं है, उन्हें अवसरों की समानता दी जानी चाहिए, आर्थिक विषमताओं का अंत किया जाना चाहिए। सामाजिक रूढ़ियों और आर्थिक असमानता से पूर्ण समाज कभी लोकतांत्रिक नहीं हो सकता। भूखे व्यक्ति के लिए कोरा मताधिकार कोई महत्व नहीं रखता। यदि समाज में ऊंच–नीच, छूत अछूत के भेदभाव हो, दरिद्रों की कतार हो, धन का न्यायपूर्ण वितरण न हो, वर्गभेद का प्रसार हो और मुट्ठी भर षिक्षित लोग निरक्षर जन–साधारण को अपने पैरों तले दबाए हो तो ऐसे देष या समाज में लोकतंत्र की बात या मानव सुरक्षा की बात करना निरर्थक है। नेहरू ने पूंजीवाद, सम्प्रदायवाद, उपनिवेषवाद, मुनाफाखोरी एवं जमाखोरी जैसी कुप्रवृत्तियों पर प्रहार किया तथा समानतावादी समाज की कल्पना कर लघु एवं कुटीर उद्योगों

को प्रोत्साहित किया। उन्होंने माना कि गरीब एवं बेकारी की समस्या का हल प्रजातांत्रिक समाजवाद में ही संभव है, और इसका व्यापक परिप्रेक्ष्य लोकतंत्र एवं समाजवाद का मानवतावादी समायोजन है इसमें उन्होंने आर्थिक स्वावलबन पर जोर दिया। लोकतंत्र एवं समाजवाद दोनों के प्रति उनकी आस्था ने उन्हें 'लोकतांत्रिक समाजवाद' का प्रतिपादक बना दिया।

नेहरू सामाजिक समानता व मानवधिकारों के पक्षधर– पंडित जवाहरलाल नेहरू सामाजिक समानता और मानवाधिकारों के कट्टर परिपोषक थे। वे भारतीय समाज में व्याप्त जातिगत संकीर्णताओं के विरोधी थे और उनको समूल नष्ट कर देना चाहते थे। डॉ. कुमुद शर्मा के अनुसार– "उन्होंने भारत जैसे धर्म प्रधान तथा विभिन्न धर्मों वाले देष के अंदर 'न्याय' एवं समानता' पर आधारित एक धर्मनिप्रेक्ष राज्य की स्थापना का स्वप्न देखा तथा स्वतंत्र भारत के संविधान में उस स्वप्न को साकार भी किया। "सामाजिक न्याय मानव अधिकार और समानता के प्रबल पक्षधर रहे नेहरू ने दलितों, पिछड़ों मजदूरों की दषा सुधारने के लिए जीवन भर भरसक प्रयास किए नेहरू का मानना था कि लोकतांत्रिक प्रणाली से ही मानव मात्र की उन्नति और सामाजिक हितों को सुनिष्चित किया जा सकता है। नेहरू ने सदियों से चले आ रहे साम्प्रदायिक वैमनस्य के विवाद में पड़े भारत को धर्मनिरपेक्षता का संदेष दिया और भारत को विश्व के अग्रणी धर्म निरपेक्ष राष्ट्रों की पंक्ति में खड़ा होने का गौरव प्रदान किया।

सामाजिक सुरक्षा और सामाजिक समानता का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए नेहरू ने ऊंच– नीच, जाति–पांति और छुआछूत के विरुद्ध व्यापक अभियान चलाया। मानव की गरिमा को उच्चतम षिखर पर स्थापित करने के लिए मानव में ईष्वरोचित गुण आरोपित किये।

धर्म एवं धर्मनिरपेक्षता पर नेहरू के विचार– नेहरू के मन मस्तिक में धर्म के प्रति कट्टरता नहीं थी वे प्रगतिषील, वैज्ञानिक, धार्मिकता के समर्थक थे। जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण वैज्ञानिक था उनकी आस्था धर्म के प्रति वैज्ञानिकता मे थी। नेहरू सभी धर्मों के प्रति समान भाव रखते हुए मानवता के प्रति समर्पित थे।

पंडित जवाहरलाल नेहरू के धर्मनिरपेक्ष विचारों को निम्न रूपों में व्यक्त किया जा सकता है–

1. धर्म निरपेक्ष व वैज्ञानिक दृष्टिकोण।
2. धर्म के आधार पर नागरिकों के साथ किसी भी तरह का भेदभाव ना करना। धर्म के आधार पर व्यक्ति–व्यक्ति में भेद नहीं किया जाना।
3. राज्य केवल समाज सुधार, समाजिक हित, समाजिक सुरक्षा, षिष्टाचार, स्वास्थ्य और सार्वजनिक व्यवस्था के उद्देष्य से ही व्यक्ति के धार्मिक जीवन और कार्यों में हस्तक्षेप करें।
4. व्यक्ति को अपने धर्म का पालन करते हुए अन्य धार्मिक विश्वासों के प्रति सहिष्णुता और सौहार्द्र का भाव रखना चाहिए।

5. धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण को सामाजिक जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी अपनाया जाना चाहिए।

नेहरू ने धर्मनिरपेक्ष भारतीय संविधान का निर्माण कराया और धर्म निरपेक्ष राज्य की रचना कराई। वे धर्म निरपेक्षता को राष्ट्र की एकता का आधार मानते थे। उनका धर्म मानवाधिकारों के आग्रह से परिपूर्ण था। वे मानते थे कि धर्म के पालन में मानवाधिकारो की पालना की जानी चाहिए।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि नेहरू का संपूर्ण जीवन मानवाधिकार के पुरोधा, मानवतावादी, दृष्टिकोण, वैज्ञानिक चिंतक और एक प्रभावी समाज सेवक के रूप में स्मरणीय रहेगा।

मानव सुरक्षा ने मानव विकास के लिए एक सक्षम वातावरण प्रदान किया। आज दुनिया के सामने मौजूद खतरों की विविधता को केवल राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रयासों के बल पर पूरा नहीं किया जा सकता। समस्याओं की प्रतिक्रिया के लिए सूचना एकत्रित करना, मानव और भौतिक संसाधनों का त्वरित और कुषल संग्रह और क्षेत्र में निष्चित विकास और निष्पादन की आवष्यकता होती है। इनमें से प्रत्येक चरण में, अंतर्राष्ट्रीय ऐजेंसियों, गैरसरकारी संगठनों और बहुराष्ट्रीय निगमों जैसी लगातार बढती विविधता में विभिन्न गैर सरकारी अभिनेता बड़ी भूमिका निभा रहे हैं।

मानव सुरक्षा के लिए चुनौतियां– बदलते अंतरराष्ट्रीय परिदृष्य में मानव सुरक्षा के लिए खतरे की धारणा में भी एक महत्वपूर्ण बदलाव आया है। दुनिया के अधिकांष हिस्सों में बाजारोंन्मुखी समाज का उदय और तकनीकी संसाधनों का असमान वितरण नई चुनौतियों का सामना करता है।

ऑस्कर एरियस के अनुसार नए युग में "मानव सुरक्षा" सैन्य क्षमता और आर्थिक शक्ति से जुडी सुरक्षा की पारम्परिक अवधारणा के विपरीत हमारी विकास नीतियों का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए। गुणात्मक शब्दों में मानव सुरक्षा उस डिग्री का प्रतिनिधित्व करती है, जिस तक मनुष्य अज्ञानता, बीमारी, भूख, उपेक्षा और उत्पीड़न से सुरक्षित रहता है। यह वह मानक है जो मानव जीवन को गौरवान्वित करता है।

मानव सुरक्षा सुनिश्चित करना– मानवता के लिए एक सुरक्षित विश्व सुनिष्चित करने के लिए निम्नलिखित उपायों की कल्पना की जा सकती है–

सर्वप्रथम– सुरक्षा नीतियों को मानव अधिकार, लोकतंत्र और विकास को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियों के साथ और अधिक निकटता से एकीकृत किया जाना चाहिए। मानवाधिकार, मानवीय और शरणार्थी कानून मानक प्रसिद्धि कार्य प्रदान करते हैं जिस पर मानव सुरक्षा दृष्टिकोण आधारित होता है।

दूसरा चूंकि लोगों की सुरक्षा के लिए चुनौतियां अंतरराष्ट्रीय है, प्रभावी प्रतिक्रियाएं केवल बहुपक्षीय सहयोग के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है।

तीसरा प्रभावी प्रतिक्रिया अधिक परिचालन समन्वय पर निर्भर करेंगी। उदाहरण के लिए सफल शांति समर्थन अभियान बहू–आयामी होते हैं और राजनीतिक वार्ताकारों, षांति रक्षकों, मानव अधिकार, मॉनिटरों मानवीय सहायता व्यक्तिगत दूसरों के बीच घनिष्ठ समन्वय पर निर्भर करते हैं। इसके अलावा विकास एजेंसियां अब सुरक्षा क्षेत्र में सुधार को बढ़ावा देने में लगी हुई है। जबकि सुरक्षा संगठनों ने संघर्ष के बाद के देषों में चैनल विकास सहायता में मदद की है इन अतिव्यापी जनादेषों और उद्देष्यों का प्रबंधन मानव सुरक्षा एजेंडे की प्रमुख चुनौतियों में से एक है।

चौथा– नागरिक समाज संगठन मानव सुरक्षा को बढावा देने के लिए अधिक अवसरों की तलाष कर रहे हैं। कई मामलों में गैर सरकारी संगठन लोगों की सुरक्षा की हिमायत करने में बेहद प्रभावी भागीदार साबित हुए हैं। साथ ही, व्यवसायिक क्षेत्र, जो संभावित रूप से मानव सुरक्षा को बढाने में एक महत्वपूर्ण कारक है, को अधिक प्रभावी ढंग से शामिल किया जा सकता है।

पांच– लोगों की भेद्यता को कम करके और उन परिस्थितियों को रोककर जो उन्हें पहले स्थान पर असुरक्षित बनाती हैं, मानव सुरक्षा को बढाया जाता है। अत्यधिक असुरक्षित स्थितियों में लोगों की सहायता करना, विषेष रूप से हिंसक संघर्ष के बीच, मानव सुरक्षा एजेंडा का एक केंद्रीय उद्देष्य है। इसलिए मानव सुरक्षा के निर्माण के लिए अल्पकालिक मानवीय कार्यवाही और शांति के निर्माण और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए दीर्घकालिक रणनीति दोनों की आवष्यकता है।

कानूनी मानदंडों को मजबूत करना और उन्हें समान शक्ति के साथ लागू करने की क्षमता का निर्माण मानव सुरक्षा को बढ़ाने के लिए दो मूलभूत रणनीतियां हैं। यह बौद्धिक नेटवर्क का निर्माण करने के लिए भी प्रभावी होगा जो अतः विषय है और सभी क्षेत्रों में ज्ञान के सहज सांझाकरण और जैविक उपयोग को सक्षम बनाता है। ज्ञान के इन नेटवर्को का प्रभाव मानव सुरक्षा की पारंपरिक अवधारणाओं के दायरे से आगे निकल जाएगा और 21वीं सदी की अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की सबसे बड़ी प्रेरक शक्ति बन जाएगा।

अंत में मानव सुरक्षा को संयुक्त राष्ट्र में 188 सदस्य देषों के साथ एक सार्वभौमिक संगठन, विकासषील देषों सहित, व्यापक रूप से आधारित समझ और समर्थन प्राप्त करना चाहिए। इसके अलावा संयुक्त राष्ट्र संभवतः एकमात्र ऐसी संस्था है, जो मानव सुरक्षा के लिए आवष्यक उपायों के निष्पादन के समन्वय में केंद्रीय भूमिका निभाने में सक्षम है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नेहरू, जवाहरलाल, हिंदुस्तान की कहानी 1946 पृ. 643
2. वीरवानी पुष्पा, भारतीय राजनीतिक विचारक, शील सन्स, जयपुर 1999 पृ.85
3. राधाकृष्णन, नेहरू पृ.7

4. हिंदुस्तान, दिनांक 14 नवंबर 1970 (संपादकीय)
5. दी ट्रिब्यून, 25 सितम्बर 1931
6. डॉ चन्देल धर्मवीर, पोइन्टर पब्लिकेषन जयपुर (राजस्थान) पृ. 131
7. मानवाधिकार, नेहरू और अंबेडकर, डॉ. धर्मवीर चंदेल, पोइन्टर पब्लिकेषन जयपुर पृ.120
8. नेहरू जवाहरलाल, डिस्कबरी ऑफ इंडिया, पृ. 455
9. जाटव बी.आर., डॉ. अम्बेडकर, व्यक्तित्व एवं कृतित्व, समता साहित्य सदन, जयपुर 133 पृ. 136
10. महाजन अषोक, हिंदुस्तान दिनांक 14.11.1971